॥ श्रीसूरिमन्त्र-पटालेखन विधि॥

संशोधकः—

तपोगच्छाचार्य शासनप्रभावक अजोड व्याख्याता आचार्य महाराजश्रीमद्विजय मोहनसूरीश्वर
पट्टधरशिष्यव्याख्यान वाचस्पति अनुयोगाचार्य पन्यासप्रवर श्रीप्रीतिविजयजी गणीवर

प्रकाशकः—

शा० डाह्याभाइ मोहोकमलाल ठे. पांजरापोल, अमदावाद.

मुद्रकः—शा० मोहनलाल मगनलाल बदामी. श्री 'जैनानंद' प्रिन्टींग प्रेस, दरीया महेल–सुरत.

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

❀ प्रस्तावना ❀

सूरिमंत्रपटालेखन नामना पुस्तकनी हस्तलिखित प्रत आचार्य श्रीजयसूरिजी पासेथी अनुयोगाचार्यपन्यासजी महाराज श्रीमत् प्रीतिविजयजी गणीवरने मली हती. वर्तमानकालमां संख्यामां वधी पडेला नवा आचार्योनी मागणी थवाथी तेओने तथा भविष्यमां थनारा नवीन आचार्योने उपकारक थशे ए हेतुथी आ प्रत छपाववामां आवी छे. जेने अंगे आ प्रतनो तथा श्रीजिनप्रतिमा पूजनस्वरुप नामना लघु पुस्तकनो तमाम खर्च मुंबइ, सेन्डहर्स्टरोड, शेठ वाडीलाल साराभाइ श्रीचंद्रप्रभु जिनालयनी पाछल आवेला उपाश्रयना कार्यवाहक शेठ मंगलभाइ तरफथी मलेलो छे; तेथी आ बन्ने पुस्तको साधु साध्वीओने तथा संस्थाओने भेट आपवामां आवे छे. अमारा तरफथी आज दिन सुधीमां सूरिमंत्र आराधनाविधि, सूरिमंत्र नित्यकर्म, सूरिमंत्र बृहत्कल्प विवरणम्, सूरिमंत्र पटालेखनविधि, सामाचारी, महाभारत तत्त्वसार, व्याख्यान श्लोकसंग्रह, श्री जिनप्रतिमा पूजन स्वरुप, एम कुले सात पुष्पो बहार पडी चुक्यां छे. आ तमाम पुस्तको भेट आपवामां आव्या छे. आगल उपर श्रीमानदेवसूरिविरचित सूरिमंत्रकल्प विवरणम्, बृहत् ह्रींकारकल्प विवरणम्, वर्द्धमान विद्याकल्प विवरणम्, मंत्रमातृका, वगेरे ग्रंथो बहार पाडवानो धारणा छे. तेमज षोडशक प्रकरण साठ फरमानुं भाषांतर साथे ए ग्रंथ पण प्रगट करवानी इच्छा छे. अनुकुलताए आ सर्व प्रगट थशे. अनुयोगाचार्य पन्यासजी महाराज श्रीमत् प्रीतिविजयजी गणीवरनुं संवत १९९४नुं चातुर्मास मुंबइ श्री गोडीजी देरासरना मेनेर्जींग ट्रस्टीओनी विनंतिथी श्रीगोडीजीना उपाश्रये थयुं हतुं; जे वखते आचार्यश्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजीनो अर्द्ध शताब्दी दिने शेठ माणेकलाल चुनीलालनुं उपाश्रये आवागमन थतां तथा ते प्रसंगे महाराजश्रीना श्री भगवतीजीसूत्रनी वाचनाना उपदेशथी शेठ माणेकलाल चुनीलालनी आग्रहभरी विज्ञप्तिथी पंचमांग श्रीभगवतीजी सूत्रनी वाचना थइ हती. उत्तराधिकारे कलिकाल सर्वज्ञभगवान श्रीमद् हेमचंद्राचार्यकृत श्रीजैनरामायण वंचातुं हतुं. पन्यासजी महाराजना उपदेशनी असर शेठश्री उपर तथा मुंबइना संघ उपर घणी सारी थइ हती. श्रीभगवतीजी सूत्रना बहुमाननो वरघोडो घणी धामधूमपूर्वक काढवामां आव्यो हतो. पन्यासजी महाराजश्रीना खास उपदेशथी शेठश्रीए पोतानी लक्ष्मीनो सद्व्यय छुटे हाथे कर्यो हतो.तेमज साधर्मी भाइओनी भक्तिमां लगभग रुपीया दस हजार खर्च्या हता. पर्वाधिराज पर्युषणामां पण तपश्चर्यादि धर्माराधन सारा प्रमाणमां अति उत्साहपूर्वक थयुं हतुं अने घणोखरी संस्थाओने तीर्थनी टीपोने महाराजश्रीना उपदेशथी घणी सारी रकम मली हती.

ली: प्रकाशकः शा० डाह्याभाइ मोहोकमलाल पांजरापोल, अमदावाद.

P. P. Ac. Gunratansuri MS Jin Gun Aaradhak Trust

बालब्रह्मचारि-श्रीमद्विजयकमलसूरिभ्यो नमो नमः ॥

सूरिमन्त्र-पटालेखन विधि

मलधारिगच्छ संप्रदायागतः सूरिमन्त्रः ॥

ॐ ह्रीँ अर्हं नमो जिणाणं ॥१॥ ॐ ह्रीँ नमो ओहि जिणाणं ॥२॥ ॐ ह्रीँ नमो परमोहि जिणाणं ॥३॥ ॐ ह्रीँ नमो सव्वोहि जिणाणं ॥४॥ ॐ ह्रीँ नमो अणंतोहि जिणाणं ॥५॥ ॐ नमो अणंताणंतोहि जिणाणं ॥ ६ ॥ ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं ॥७॥ ॐ नमो बीयबुद्धीणं ॥८॥ ॐ नमो पयाणुसारीणं ॥ ९ ॥ ॐ नमो संभिन्नसोईणं ॥१०॥ ॐ नमो उज्जुमईणं ॥११॥ ॐ नमो विउलमईणं ॥१२॥ ॐ नमो चउदसपुव्वीणं ॥१३॥ ॐ नमो अट्ठंग निमित्त कुसलाणं ॥१४॥ ॐ नमो विउव्वि इड्ढी-पत्ताणं ॥१५॥ ॐ नमो विज्झाहराणं ॥१६॥ ॐ नमो जंघा चारणाणं ॥१७॥ ॐ नमो पण्ह समणाणं ॥१८॥ ॐ नमो आगा-सगामीणं ॥ १९ ॥ ॐ वग्गुवग्गु निवग्गु निवग्गु सुमण सोमणसे महु महुरे ॐ इरिकालि किरिकालि गिरिकालि पिरिकालि-सिरिकालि हिरिकालि-ॐ इरियाए पिरियाए-सिरियाए-हिरियाए ॐ कालि कालि महाकालि-ॐ इरिइरिकालि-पिरिपिरि कालि-सिरिसिरि कालि-हिरिहिरि कालि-आयरिय आयरिय कालि स्वाहा-ॐ इरिइरी मेरु-किरि किरि मेरु गिरिगिरिमेरु-सिरिसिरिमेरु-पिरिपिरिमेरु हिरिहिरिमेरु-ॐ ह्रीँ आयरियमेरु स्वाहा ॥ ९८० ॥ ॐ नमः सिद्धं श्रीमद्गुरुभ्यो नमः ॥

P. P. Ac. Gunratansuri M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

श्री सूरिमंत्रयन्त्रोद्धारो लिख्यते यथा ॥ प्रथम षट्कोण चक्र करिने चक्र मध्ये ह्रूँ ह्रीँ ॐ ह्रुँ लिखि बीचमे महावीर स्वामि मूर्ति करवी अथवा गौतमस्वामिजीनी मूर्ति करवी जीमणी तर्फ इन्द्रमूर्ति डाबी तर्फ इन्द्राणी तथा जिमणा तरफमां ॐ ह्रीँ लिखि निचे ॐ पिरिकालि स्वाहा ॐ झो नमः स्वाहा डाबी तर्फमां ॐ ह्रीँ सिरि मेरु झोँ स्वाहा सिरिमेरु स्वाहा ॥ त्यारबाद षट्कोण चक्रना दरेक कोणमां लखवो तेहमां पूर्वमां ॐ ह्रीँ नीचे ॐ इरिमेरु झोँ स्वाहा मेरु ॥ १ ॥ अग्नि कोणे ॐ ह्रीँ नीचे ॐ किरिकिरिमेरु झोँ स्वाहा ॥२॥ दक्षिणे ह्रीँ ॐ अर्हं ॥ नैर्ऋतकोणे ह्रीँ ॐ अर्हं ॐ सिरिमेरु हिरिमेरु झोँ स्वाहा ॥ पश्चिमे ह्रीँ ॐ अर्हं ॐ आयरियमेरु झोँ स्वाहा ॥ वायव्यकोणे लिखवानो ह्रीँ ॐ अर्हं ॐ पिरिकालि झोँ स्वाहा ॥ ईशानकोणे ह्रीँ ॐ अर्हं ॐ महाकालि झोँ स्वाहा ॥ दक्षिणोत्तरे चामरवाला चारे कोणे वार पर्षदा ततो वलयं कृत्वा लिखेत यथा जिन ॥१॥ अवधि ॥२॥ परमावधि ॥३॥ अनंत ॥४॥ अनंतानंत ॥५॥ पाठांतरे सर्वावधि ॥६॥ बीज ॥ ७ ॥ कुट्ठबुद्धि ॥८॥ पदानुसारि ॥९॥ संभिन्न ॥१०॥ खिरासव ॥११॥ महुवासव ॥१२॥ अभियासव ॥१३॥ अक्खिहा ॥ १४ ॥ आमोसहि ॥१५॥ विप्पोसहि ॥१६॥ खेलोसहि ॥१७॥ जल्लोसहि ॥१८॥ सव्वोसहि ॥१९॥ वेउविय ॥२०॥ सव्वलद्धि ॥२१॥ उज्जुमइ ॥२२॥ विउलमइ ॥२३॥ जंघा ॥२४॥ विज्जा ॥२५॥ पण्णसमणस्स ॥२६॥ विज्जासिद्ध ॥२७॥ आगासगामि ॥ २८ ॥ तत्तलेस ॥२९॥ सीयलेस ॥३०॥ तेउलेस ॥३१॥ वयणविस ।.३२॥ आसिविस ॥३३॥ दिट्ठिविस ॥३४॥ चारण ॥ ३५ ॥ महासमण ॥३६॥ तेउग्गनिसग्ग ॥३७॥ वाइ ॥३८॥ अट्ठंगनिमित्त ॥३९॥ पडिमा ॥४०॥ ततो वलयं कृत्वा तेहमां कमलनी पांखडीओ करवी वलयने बाहार चार खुणे चार देवीओ करवी ॥ त्यारबाद समोसरणनो पहेलो गढ मणिरत्ननो तेहना चार दरवाजा

P. P. Ac. Gunratansuri M. S. Jun Gun Aaradhak Trust

तेह प्रथम गढनी जीमणी बाजुए लीखवानो मन्त्र ॥ यथा ॥ ॐ नमो जिणाणं ॥१॥ ॐ नमो ओहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ नमो परमोहि जिणाणं ॥३॥ ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं ॥४॥ ॐ नमो अणंतोहिजिणाणं ॥५॥ ॐ नमो अणंताणंतोहिजिणाणं ॥६॥ ॐ नमो केवलिणं ॥७॥ भवथ ॥८॥ अभवथ ॥९॥ सामन्न ॥१०॥ उग्गतव ॥११॥ चउदसपुव्वी ॥१२॥ दसपुव्वी ॥१२॥ एकारसंगधारि ॥१४॥ एयं जमियं विज्जं पउंजे सा मे विज्झा पसिजेज्झा ऊँ झँ स्वाहा ॥२॥ अथ डावी बाजुनो लिखवानो मन्त्र ॥९८०॥ ॐ ह्री श्रीँ ॐ क्रौँ ॐ पडिमा पडिवण्ण ॥३९॥ जिणकप्पपडिवण्ण ॥४०॥ अणिमाइ सिद्धि ॥४१॥ सामन्न ॥४२॥ भवथ ॥४३॥ अभवथ ॥४४॥ उग्गतव ॥४५॥ दित्ततेय ॥४६॥ तत्ततेय ॥४७॥ चउदसपुव्वी ॥४८॥ दसपुव्वी ॥४९॥ एकारसंगी ॥५०॥ दिट्ठिवाइ ॥५१॥ पूर्वविद्याविभागमासन्नलग्नार्वारे दत्तलग्नवेलायां मेरवो दातव्याः ॥ इति संपूर्ण सूरिमन्त्रविद्यापदविवरणं ॥३॥ बीजो सोनानो गढ तेहमां–पूर्व–दक्षिण–पश्चिम उत्तरे लिखवानो मन्त्रादि ॥ अथ पूर्व दिशानो मन्त्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्री नमो अरिहंताणं ॥१॥ ॐ ह्री श्रीँ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ ॐ ह्रीँ नमो ओहिजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ नमो परमोहिजिणाणं ॥२॥ ॐ ह्रीँ नमो सव्वोहिजिणाणं ॥३॥ ॐ ह्रीँ नमो अणंतोहिजिणाणं ॥४॥ ॐ ह्रीँ नमो कुट्ठबुद्धीणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ नमो बीयबुद्धीणं ॥६॥ ॐ ह्रीँ नमो पयाणुसारीणं ॥७॥ ॐ ह्रीँ नमो संभिन्नसोयाणं ॥८॥ ॐ ह्रीँ नमो सयं संबुद्धाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ नमो पत्तेयबुद्धाणं ॥१०॥ ॐ ह्रीँ नमो उज्जुमईणं ॥११॥ ॐ ह्रीँ नमो विउलमईणं ॥१२॥ ॐ ह्रीँ नमो चउदसपुव्वीणं ॥१३॥ ॐ ह्रीँ नमो दसपुव्वीणं ॥१४॥ ॐ ह्रीँ नमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौँ झ्रौँ सत्यं सत्यं कथय पसिज्झउ स्वाहा ॥ एत-

P. P. Ac. Gunratansuri... Gun Aaradhak Trust

दष्टोत्तरशतजापेन यत्किंचित्पृच्छ्यते तत्सर्वं कथयति भवति च ॥ इति प्रथमपीठे प्रथम वक्तव्यता ॥ दक्षिण दिशाना भागमां लखवानो मन्त्र ॥ यथा ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो अरिहंताणं ॥ अत्रापि पूर्ववत्पाठः ॥ समग्रपदानामोँ सहितानां ॥ ॐ ह्रीँ नमो आमोसहिपत्ताणं ॥१॥ ॐ ह्रीँ नमो जल्लोसहिपत्ताणं ॥२॥ ॐ ह्रीँ नमो खेल्लोसहिपत्ताणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ नमो विप्पोसहिपत्ताणं ॥४॥ ॐ ह्रीँ नमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौँ झ्रौँ स्वाहा ॥ गुल्म–शूल ॥ प्लीह–दाढागंड–गंडमाला–कुष्ट–सर्वज्वर–अतीसार–लूता–व्रण–विषाणि अन्येऽपि अष्टोत्तरशतव्याधयश्च एजनेन जलपानेन नश्यन्ति पूर्ववत्पाठः ॥२॥

अथ पश्चिमदिशाना भागमां लखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॥ ॐ ह्रीँ नमो उग्गतवाणं ॥१॥ ॐ ह्रीँ नमो दित्ततवाणं ॥२॥ ॐ ह्रीँ नमो महातवाणं ॥३॥ ॐ ह्रीँ नमो घोरपरकमाणं ॥४॥ ॐ ह्रीँ नमो घोरपरक्कमाणं ॥५॥ ॐ ह्रीँ नमो घोरगुणाणं ॥६॥ ॐ ह्रीँ नमो घोरगुणबंभयारीणं ॥ ७ ॥ झ्रौ झ्रौँ स्वाहा ॥ युद्धतस्करादिषोडशभयनाशो ॥ युद्धविलय थाय ॥ पूर्ववत्पाठः ॥ सर्वसकलतयैक्यं ॥

ह्रीँ ॐ अर्हं ॥ ॐ ह्रीँ नमो खीरासवीणं ॥१॥ ॐ ह्रीँ नमो सप्पिरासवीणं ॥२॥ ॐ ह्रीँ नमो महुयासवीणं ॥३॥ ॐ ह्रीँ नमो अमयासवीणं झ्रौँ झ्रौँ स्वाहा ॥ सर्वौषधी उत्पाटनं ॥ बंधननियोजना अभिमन्त्रणा–खानपानाभिमन्त्रणा–कालापानीय स्थावर–जंगम–जाठरयोग–कृत्रिमादि–सर्वदोष–सर्वदोष–सर्प्पवृश्चिकादिविषहरणं जलपानामृतध्यानेन ॥

उत्तर तरफ सुवर्ण गढमां लखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॥ सर्वाणि विषाणि विनाशमायान्ति। भास्करेण तमो यथा ॥ प्रणवनमोयुक्तानि पदानि ॥ जिन ॥१॥ अवधि ॥२॥ परमावधि ॥३॥ सर्वावधि ॥४॥ अनंत ॥५॥ अनंतानंत ॥६॥ बीय ॥ ७ ॥ ह्रीँ–

P. P. Ac. Gunratansuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ॐ–अर्हं ॥ कोष्ठबुद्धीणं ॥८॥ पदानुसारि ॥९॥ संभिन्न ॥१०॥ खीरासव ॥११॥ महुयासव ॥१२॥ अखीण ॥१३॥ आमोसहि ॥ १४ ॥ विप्पोसहि ॥१५॥ खेल्ल ॥१६॥ जल्ल ॥१७॥ सव्वो ॥१८॥ वेउविय ॥१९॥ सव्वलद्धि ॥२०॥ उज्जुमई ॥ २१ ॥ विउलमई ॥२२॥ जंघा ॥२३॥ विज्ज ॥२४॥ पण्णसमण ॥२५॥ विज्जासिद्ध ॥२६॥ आगासगामी ॥२७॥ तत्तलेस ॥ २८ ॥ सीयलेस ॥२९॥ तेउलेस ॥३०॥ वयणविस ॥३१॥ आसिविस ॥३२॥ दिट्ठिविस ॥ ३३ ॥ चारण ॥३४॥ महासमण ॥ ३५ ॥ तेउग्गनिसग्ग ॥३६॥ वाई ॥३७॥ अट्ठंगनिमित्त ॥३८॥ पडिमापडिवण्ण ॥३९॥ जिणकप्प ॥ ४० ॥ अणिमाइसिद्धि ॥ ४१ ॥ सामन्न ॥४२॥ भवथ ॥४३॥ अभवथ ॥४४॥ केवलि ॥४५॥ उग्गतव ॥४६॥ दित्ततव ॥४७॥ महातव ॥४८॥ चउदसपुव्वी ॥ ४९ ॥ दसपुव्वी ॥ ५० ॥ एक्कारसंगी ॥ ५१ ॥ एवं सर्वाणि संपूर्णसूरिमन्त्रपदानि सप्रभावः (सप्रभावाणि) अनेकविस्तरेण वर्ण्यन्ते गुप्तोक्तं न कथनीयं— ह्रीँ ॐ अर्हं–गद बीजो संपूर्ण ॥

अथ त्रीजो रुपानो गढ ॥ तेहनां पूर्व तरफ लखवानो मन्त्रः यथा ॥९८०॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऋषभस्वामिने नमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पुंडरीकगणधारिणे नमः ॥ ॐ ॥ ३२ ॥ २८ ॥ १८ ॥ १६ ॥ १३ ॥ १२ ॥ ८ ॥ यावत्पंच भविष्यंति इहात्यंतगोप्यानि ॥ आम्नानि अन्यतराण्यपि सन्तीति वृद्धाः ॥ तथाहि ॐ नमो परमोहिजिणाणं एतन्मन्त्रस्य संध्यायां कायोत्सर्गेण तिष्ठेत् शिरोरोगोऽपयाति ॥ १ ॥ ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगो याति ॥ २ ॥ ॐ नमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगनाशः ॥ ३ ॥ ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं ॥ ४ ॥ शूल–गुल्म–कुमिनाशः ॥ ॐ नमो पत्तेयबुद्धीणं ॥ प्रतिवादिपक्षस्य वाग्विच्छेदः ॥ ५ ॥ ॐ नमो सयंसंबुद्धाणं ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा ॥ प्रतिदिवसं सिद्धभक्तिं कृत्वा अष्टोत्तरशतदिनानि यावदष्टोत्तरशतं जपेत् कवित्वं । आ-

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jun Aaradhak Trust

गमवेदित्वं च भवति ॥६॥ ॐ नमो बोहिबुद्धाणं झौं झौं स्वाहा ॥ ७ ॥ पंचविंशतिदिनानि यावत् शतं जपेत् एकसंधो भवति (संघस्यैकाग्रता भवति कुसंपो दूरे याति)

रुपाना गढमां दक्षिण तरफ लखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॐ नमो सव्वसिद्धाणं झौं झौं स्वाहा ॥ लवणं आम्लभोजनं वर्ज्यं (भोजनं) बहुश्रुतत्वं प्रकाशयति ॥ ९ ॥ ॐ नमो दसपुव्वीणं झौं झौं स्वाहा एकांतरे भोजनं कृत्वा दिनाऽस्तसमये दिनानि ८० यावत् जपेत् परसमयागमवेदित्वं भवति ॥ १० ॥ ॐ नमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं झौं २ स्वाहा दिनानि २८ यावत् पंचोपचारक्रमेण रक्तकरवीरपुष्पैः १४९ जपेत् काम्यवस्तुनि प्राप्नोति ॥११॥ ॐ नमो विज्जाहराणं झौँ झौँ स्वाहा दिन २५ यावत् जाति पुष्पैः १०८ जपेत् देशतोऽन्तरीक्षगामी ॥ १२ ॥ ॐ नमो चारणाणं झौँ झौँ स्वाहा नदीतीरे स्नात्वा चतुर्विंशतिं २४ जपेत् कायोत्सर्गं कृत्वा ॥ नष्टमुष्टिचिंतास्वरूपं जानाति ॥ १३ ॥ ॐ नमो पण्ह समणाणं झौँ झौँ स्वाहा दिनानि अष्टाविंशतिं यावत् श्वेतकणवीरपुष्पैर्जिनगृहे चन्द्रप्रभपादमूले जपेत् ॥ आयुरवसानं कथयति ॥ १४ ॥ २ ॥

रुपाना गढमां पश्चिम तरफ लखवानो मन्त्र ॥ यथा ॥ ॐ नमो आगासगामीणं झौँ झौँ स्वाहा दिनानि अष्टाविंशतिं यावत् जपेत् । अलवणकंजिकेन भोजनं योजनमेकं खे याति॥१५॥ ॐ नमो दिट्ठिविसाणं झौँ झौँ स्वाहा। गमनस्तंभः॥१६॥ ॐ नमो दित्ततवाणं झौँ झौँ स्वाहा स्वौ मध्याह्ने दिनत्रयं यावत् जपेत् ॥ चौरस्तंभः ॥१७॥ ॐ नमो महातवाणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ शुद्धजलं अष्टोत्तरशतं अभिमन्त्र्य पिबेत् ॥ अग्निस्तंभः ॥१८॥ ॐ नमो मणोबलिणं झौँ झौँ स्वाहा दिनद्वयं जपेत् ॥१०८॥ जलस्तंभः ॥१९॥ ॐ नमो घोरतवाणं झौँ झौँ स्वाहा विषसर्पादिरोगभयः नश्यति॥२०॥ ॐ नमो महाघोरतवाणं

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jun Aaradhak Trust

झौँ झौँ स्वाहा ॥ अनेन जापेन दुष्टा न प्रभवंति ॥ २१ ॥ ॐ नमो घोरपरकमाणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ लूतादिदोषापनयनं ॥२२॥ ॐ नमो घोरबंभयारिणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ ब्रह्मराक्षसनाशः ॥ २३ ॥ ॐ नमो खेलोसहिपत्ताणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ सद्यः अपमृत्युनाशः ॥२४॥

रुपाना गदमां उत्तर तरफ लखवानो मन्त्रः यथा ॥ ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ शुद्धनदीजले १०८ जपित्वा जलं पिवेत् ॥ दिनत्रयेण अपस्मारादिनाशः ॥ २५ ॥ ॐ नमो विप्पोसहिपत्ताणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ नरमारिशमः ॥ २६ ॥ ॐ नमो मणोबलिणं झौँ झौँ स्वाहा दिनद्वयं जपेत् ॥ अपस्मारिशमः ॥ अष्टशतं ॥ २७ ॥ ॐ नमो वयणबलिणं झौँ झौँ स्वाहा ॥१०८॥ अजमारिशमः ॥ २८ ॥ ॐ नमो कायबलिणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ दिनत्रयं जपेत् ॥ गोमारिनाशः ॥२९॥ ॐ नमो अमयासविणं झौँ झौँ स्वाहा ॥ समस्तोपसर्गनाशः॥३०॥ ॐ नमो सप्पियासविणं (पाठान्तरे सप्पिरासवलद्धीणं) झौँ झौँ स्वाहा-एकाहिकं-द्व्यहिकं-त्र्यहिकं-चातुराहिकं-मासिकं-षण्मासिकं-वार्षिकं-पैत्तिकं-श्लेष्मादीनां दिनत्रयेण नाशयति ॥३१॥ ॐ नमो खीरासवलद्धीणं झोँ झोँ स्वाहा ॥ कायोत्सर्गे स्थित्वा १०८ जपेत् क्षीरं अभिमन्त्र्य दिन २४ पिवेत् ॥ अष्टादशकुष्ठव्रणोपशमः ॥३२॥ एवमन्यस्तुतिपदेष्वपि प्रभावोऽस्ति इति ध्येयं ॥

अथ समोसरणबाहार चवुतरो तेह चवुतरानी चारे कोणमां बे बे (दो दो) वावडी करणी प्रत्येक वावडीए जाति वैर तिर्यंचो आलेखवा हवे चवुतरानी प्रत्येक दिशामां लिखवानी विगत तेहमां पूर्व पूर्व दिशानो लिखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॥ ॐ नमः ॥ अथोपविद्या ॥ ३२ ॥ तत्र पूर्वं बाहुबलिविद्या महाविद्या ॥ ॐ नमो भगवओ बाहुबलिस्स पण्हसमणस्स महापण्णसमणस्स

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jun Aaradhak Trust

सयबलविरियस्स–महाबलस्स–महाबलस्स–महापरक्कमणस्स–सहस्समल्लस्स–महाबाहूस्स–महाबलविक्कमस्स–सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविज्झा स्वाहा ॥ अमुक (सूरीणां) पाठ सिद्धा ॥

गणिपीटक महागर्भपेटाविनि कांता स्मरणमात्रान्महासिद्धिसमृद्धि–वांछितेष्टलब्धिप्रदायीनि भवन्तु ॥ ॐ ह्रीँ झौँ स्वाहा ॥ महाविद्येयं बाहुबलि जोहपरक्कमा सिद्धविद्यागुप्ता सती महाफलाय भवति ॥१॥

अथ दक्षिण दिशानो लिखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॥ अथ विद्या ॥ ॐ इरिकालि ॐ किरिकालि ॐ गिरिकालि पिरिकालि सिरिकालि हिरिकालि आयरियकालि स्वाहा ॥ ॐ वग्गु वग्गु इत्यादि आयरियकालि स्वाहा ॥ तानि केवलज्ञानमयपदानि अतो–अस्याः स्मरणमात्रेण(स्मरणेन) त्रिभुवनेऽप्यप्रतिहतशासनो भवति ॥ केवलं अत्र महाविद्या प्रांते स्वाहा ॥

विद्याप्रारंभे प्रणयेनोच्चार्य जापश्चास्या सहस्रषोडश (१६०००) इति विधेयं (भट्टारक श्रीविजय सूरीणां) समभिलषितज्ञानमाहात्म्यमुपेयुषा समग्रवांछितसिद्धयश्च संभवंति—ॐ ह्रीँ क्रौँ स्वाहा ॥२॥

अथ पश्चिम दिशामां लिखवानो मन्त्रः ॥ यथा ॐ इरिकिरिचक्रेश्वरि न्यासः ॥ १ ॥ ॐ गिरिदिक्कुमारीणां ॥ २ ॥ ॐ पिरितीर्थदेव्यः ॥ ३ ॥ ॐ सिरिहिरि इति नंदा–भद्रा–जया–अपराजिताचतुर्विंशतिदेवीगौरीगांधारीरोहिणीप्रभृतीनां प्रज्ञप्त्यादीनां ॥ ४ ॥ आयाइरि इत्यादि आत्मदेव्यः ॥ ५ ॥ॐ कालिमहाकालिरिति तीर्थंकरगणधरनिर्वृतिगमनानंतरसंदेहजाते संघस्य तद्व्यवच्छेदलक्षणकालः सोऽस्ति इति ॥६॥ इरीति शांतिदेव्यः ॥७॥ किरीति भव्यदेव्यः ॥ ८ ॥ गिरीति निर्वृतिदेव्यः ॥९॥ सिरिहिरि इति श्रीँ श्रीँ ह्रीँ धृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीजभंनीमोहिनीनां ॥ १० ॥ आयरीयेति बला देव्यः ॥ ११ ॥ अति बला

P. P. Ac. Gunratansuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देव्यः॥१२॥ महाबला देव्यः॥१३॥ महामहाबला देव्यः॥१४॥ सोमनस्यादयो देव्यः ॥१५॥ मिथ्यात्वदेव्यः॥१६॥ एवं सर्वत्र कृतोपवास ॥ कायोत्सर्गेति इत्यादि विधानविधिना बलिपुरस्सरं संस्कारकरणेन च शीलसत्यशौचादिधारणेन स्वस्य च संघस्य कार्यार्थं जाप १६००० मन्त्रे पानीय छटा ॥३॥

उत्तर भागमां लिखवानो मन्त्र यथा ॥ ॐ नमः ॥ अथोपविद्या ॐ इरियाए किरियाए गिरियाए पिरियाए सिरियाए हिरियाए आयरियाए ॥ ॐ कालिकालि महाकालि स्वाहा ॥ सामान्यतो जाप सहस्रद्वादश (१२०००) विशेष सुजात्यादि कुसुमैः सहस्रषोडश (१६०००) सारस्वतं उपोष्य १०८ जपेत् स्वमविद्या-किंशुकरक्तध्यानेन पर्वतमुद्रया सहस्रद्वादश जपेत् वश्यं इदं-महाविद्यांगीभूता परा शक्तिः श्री भट्टारक विजयसूरिणां समभिष्टसिद्धिः समृद्धिपूरणे वश्यकरणे चेष्टीभवतु ॥ ग्रौं स्वाहा ॥४॥ यादृशं यन्त्रं दृष्टं तादृशं लिखितो मया । यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥५॥ विक्रमाब्दे १९७८ पौष पूर्णिमायां लिपिकृतोऽयं जयसूरिणा शीरपुरे खानदेशे पद्मप्रभोः प्रसादात् ॥ शुभं भवतु ॥६॥

बारे पर्षदानी विगत ॥ यथा ॥ अग्नि कोणे साधु-वैमानिक देव साध्वीओ उभी ॥ नैर्ऋत्य कोणे भुवनपति देवता ज्योतिष देवता व्यंतर देवता ॥ वायव्यकोणे भुवनपति देवी ज्योतिष देवी व्यंतर देवी ॥ (ईशानकोणे) वैमानिक देवी श्रावक श्राविका ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jun Aaradhak Trust

॥ ॐ नमः ॥

श्रीसूरिमन्त्राधिष्ठायकस्तवन

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

श्रीजयश्रियं श्रीजिनशासनस्य कलिद्विपोत्थोत्थितविघ्नहरता । परां य एते त्रातव्रुतेऽधुनापी श्रीसूरिमन्त्रं प्रयतः सुवलतेः ॥१॥
त्वं तीर्थकृत्त्वं परमं च तीर्थं त्वं गौतमस्त्वं गणभृत्सुधर्मा । त्वं विश्वनेता त्वमसि हितानां निधिः सुखानामिह मन्त्रराजः ॥२॥
किं कामधेनुः सुरपादपो वा किं कामकुंभः सुमनोमणिर्वा । यदि प्रसन्नः सकलेष्टदायी श्रीसूरिमन्त्रोऽसि जगत्पतिस्त्वं ॥३॥
त्वयि स्थिते चैव त्वमसि के नु विघ्ना के दुर्जनाः के प्रतिपक्षभूपाः। के वैरिणः ततो रुपद्रवाश्च स्वामिन् समग्रं हि सुखाकृदेव ॥४॥
न लब्धयः काश्चन ते प्रभावात् त्वयं प्रभो भक्तिभृतां दुरापा । सदासुखानंदितचेतसो यत् खेलंति ते श्रीमद्धिसं प्रभाभिः ॥५॥
प्रवर्तितं तीर्थमिदं जनस्य जयाद्यदाहु प्रसतेह कुष्टी । यदागमो यद्विजयी च धर्मस्त्वदत्र हेतुर्भगवांस्त्वमेव ॥६॥
श्रीवर्धमानस्य निदेशतस्त्वं प्रतिष्ठितो गौतम गच्छनेता। सिद्धिः समग्रा शिवसंपदश्च सर्वोग्रपुण्योऽवि (पुण्यानि) फलानि दत्से ॥७॥
इति महामुनिसुंदरसंस्तवास्य दगणेश्वरमन्त्रपते मया । महिमवारिनिधेस्तुतभक्तितो वितर मेऽर्थितसर्वसुखश्रियं ॥८॥

इति श्रीसूरिमन्त्रस्तोत्रं ॥ १ ॥

P. P. Ac. Gunratansuri MS

Jin Gun Aaradhak Trust

जयश्रियं शासनमार्हतं श्री सूरीश्वरा यस्य महामहिम्ना। नयंति बाह्यांतरवैरिनाशादाचार्यमन्त्रं तमहं स्तविमे ॥१॥

न किं सुखं तस्य वसेन का वा, सिद्धिर्न बुद्धिर्न हि वा समृद्धिः । श्रीमन्त्रनेन भगवन्निवासं करोपि नित्यं हृदये यदीये ॥२॥

गणाधिपो वा जिननायको वा प्रथमवासि धर्मोऽस्य महामहिम्ना। स्तुतिस्तवेते शुचितोपमानो न चातिहीनस्त्रिदशद्रुमाद्यैः ॥३॥

ध्येयस्त्वमेवासि परो जगत्सु, प्रभुस्त्वदानेर्थितशर्मलक्ष्म्या । इमं पुनः कारणकार्ययोगं के नामविनो ( ) भ्रभाम्य ॥४॥

किं मामयस्तस्य खलो रिपुर्वा, दुःखं भयं पापमथापि विघ्नः। त्रातासि मन्त्राधिप यस्य वज्रं,भिनत्ति स चाण्वखिलान्यहिद्राग ॥५॥

तीर्थस्य धर्मस्य तथार्हतस्य, हेतुस्त्वमेकोऽसि कलौ प्रवृत्ते । कलेर्हि नान्योऽभिभवे प्रभुत्वं धत्ते दवाग्नेरिव वारिवाहात् ॥६॥

भवैरनंतैरपि दुर्लभस्त्वं, शुभं च सर्वसुलभं त्वदाप्तौ । तवैव मन्त्राधिपते तदेव कुर्यां समाराधनमेव यत्नात् ॥७॥

इति महामुनिसुंदरसंस्तवास्य दणेश्वरमन्त्रपतेर्मया । महिमवारिनिधिस्तुतभक्तितो वितर मेऽर्थितसर्वसुखश्रिये ॥८॥

इति सूरिमन्त्रस्तोत्रं समाप्तम् ॥ २ ॥

P. P. Ac. Gunratansuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जयसिरिविलासभवणं, वीरजिणंदस्स पढमसीसवई । सयलगुणलद्धिजलहि सिरिगोयमगणहरं वंदे ॥ १ ॥

ॐ सह नमो भगवउ, जगगुरुणो गोयमस्स सिद्धस्स । बुद्धस्स पारगस्स अखीणमहाणसस्स सया ॥ २ ॥

अवतर अवतर भगवन्मम हृदये भास्करीश्रियं । विश्रवे ह्रीँ श्रीँ ज्ञानाद्यो वितरतु तुभ्यं नमः स्वाहा ॥ ३ ॥

वसइ तुह नाममंतो जस्स मणे सयलवंछिअं दिंतो । चिंतामणिसूरपायवकामघडाहि किं तस्स ॥ ४ ॥

सिरिगोयमगणनायग तिहुअणजणसरणदुरियदुहहरण । भवतारण रिउवारण होसु अणाहस्स मह नाहो ॥ ५ ॥

मेरुसिरे सिंहासण कणयमहासहसपत्तकमलठिअं । सूरिगणकाणविसय ससिप्पह गोयमं वंदे ॥ ६ ॥

सव्वसुहलद्धिदाया समरियमित्तो वि गोयमो भयवं । पयठिअगणहरमंतो दिज्ञा मम मनवंछियं सयलं ॥ ७ ॥

इय सिरी गोयमसंथुअं मुणिसुंदर थुइ पयं मएपितुमंदेहि । महा सुद्धि सिवफलय भुवण कप्पतरुय ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीगौतमगणधरस्तोत्रं ॥

P. P. Ac. Gunratansuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust